“रामायण में वर्णित वनस्पतियों का वर्णन"

डॉ० कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर

जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

अनादि काल से संपूर्ण विश्व में वेदों एवं वनस्पति विज्ञान के अंतर्गत वृक्ष, वनस्पतियों, औषधियां का वर्णन प्राप्त होता है ।ऋग्वेद में वन ,वृक्ष, औषधियों एवं पर्वतों को मानव के रक्षक के रूप में वर्णित किया गया है।[1] यजुर्वेद के 16 वें अध्याय रूद्रा ध्याय में शिव को वृक्ष, वनस्पति, वन, औषधियों ,लतागुल्म का स्वामी बताया गया है -

वनानां पतये नमः। वृक्षाणां नाम पतये नमः।

ओषधीनां पतये नमः। कक्षाणां पतये नमः।[2]

शतपथ ब्राह्मण में वृक्ष वनस्पतियों को पशुपति अर्थात शिव माना गया है।[3] एतरेय[4] और कौषीतकि[5] ब्राह्मण में वनस्पतियों को प्राण माना गया है ।वेदों से ही निर्बाध रूप से वर्णित वृक्ष वनस्पतियों आदि का साम्राज्य रामायण में भी स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता है।रामायण में नगर हो अथवा अरण्य वृक्ष, वनस्पतियों की सुषमा चतुर्दिक दृष्टिगत होती है।यहां ऋषियों मुनियों से लेकर सामान्य प्राणियों एवं जीव-जंतुओं को भी वृक्षादि प्रभावित करते हैं। वृक्ष वनस्पतियां औषधीय मानव की रक्षक है यह प्राण वायु प्रदान करते हैं मनुष्यों को ऑक्सीजन द्वारा जीवन शक्ति प्रदान करते हैं मनुष्य कार्बन-डाइऑक्साइड देकर वृक्षों को पोषक भोजन प्रदान करते हैं। वृक्ष-वनस्पतियों के पांच अंग प्राप्त होते हैं-मूल, स्कंध, पत्र, पुष्प, फल, वृक्ष वनस्पतियों के यह पांच अंग मानव के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। किसी वृक्ष का मूल किसी का स्कंध किसी के पत्ते किसी के पुष्प तो किसी के फल विशेष महत्व रखते हैं किसी-किसी वृक्ष के यह पांचो अंग अपना विशेष महत्व रखते हैं।

रामायण के बालकांड से ही प्रारंभ हुई वृक्ष-वनस्पतियों की छटा समग्र रामायण में दर्शनीय है। बालकांड में अयोध्यापुरी के वर्णन में वृक्षों का साम्राज्य दिखाई देता है ।अयोध्या नगरी में चारों ओर उद्यान तथा आमों के बगीचे थे। उस नगरी को साखू के वन सब ओर से घेरे हुए थे।[6] इस वर्णन द्वारा आम एवं सांखू के वृक्षों का महत्व दृष्टिगोचर होता है। साखू की लकड़िया का वर्तमान युग में भी अत्यधिक महत्व है। इन्हीं साखू की लकड़िया ने अयोध्या को चारों ओर से घेर रखा था ।अयोध्या कांड में ही श्रीराम ,सीता, लक्ष्मण के वत्स प्रदेश में पहुंचकर एक वृक्ष के नीचे ठहरने का उल्लेख प्राप्त होता है।[7] इससे वृक्षों की सघन छाया में मानव का विश्राम एवं उसका वृक्षोंकी सान्निधि में निवास व्यक्त होता है।अयोध्या कांड में ही भारद्वाज ऋषि के आश्रम पर जाते समय श्री राम आदि को फूलों से सुशोभित विविध वृक्षों का दर्शन हुआ।[8] भारद्वाज आश्रम के समीप का वर्णन है कि-

वन में फल ,फूल और काष्ठ से जीविका चलाने वाले लोगों के लिए लकड़िया का महत्व वर्णित है ।आश्रम में नाना प्रकार के वृक्ष भी हैं।[9] भारद्वाज ऋषि ने श्रीरामादि को चित्रकूट पर्वत पर निवास करने के लिए कहा- तुम मधुर फल -फूल से संपन्न चित्रकूट पर्वत पर जाओ।[10]यह वर्णन वृक्षों के वैज्ञानिक महत्व को अपने आप सिद्ध करता है ।भारद्वाज ऋषि ने श्रीराम से एक बहुत बड़े बरगद के वृक्ष का वर्णन किया , जिसके पत्ते हरे -भरे हैं ।चारों ओर से बहुसंख्यक दूसरे वृक्षों से घिरा

हुआ है ।उस वृक्ष का नाम श्याम वट है ।वहां बहुत से सिद्ध पुरुष निवास करते हैं ।सीता दोनों हाथ जोड़कर उस वृक्ष से आशीर्वाद की याचना करें।[11] इस वर्णन के द्वारा वृक्षों के शिवत्व की परिकल्पना व्यक्त होती है। रामायण में अयोध्या कांड के विविध वृक्षों का उल्लेख इन वृक्ष- वनस्पतियों के महत्व को दर्शाता है ।जीवन में जो विषय, वस्तु या पदार्थ उपयोगी होता है उसका वर्णन स्वयमेव सहजता से प्राप्त हो जाता है ।श्रीराम सीता को चित्रकूट की शोभा दिखाते हुए कहते हैं - आम ,जामुन, असन ,लोध, प्रियाल, कटहल, छव ,अंकोल ,भव्य, तिनिश ,बेल, तिन्दुक,बांस, मधुपर्णिका ,नीम, वरण, महुआ ,तिलक, बेर ,आंवाला कदम्ब,धन्वन ,बीजक ,(अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्ष है ।ये फूलों और फलों से लदे हैं ।[12] इन समस्त वृक्ष -वनस्पतियों की हमारे जीवन में अत्यंत उपयोगिता है ।अरण्यकांड में रावण का समुद्रवर्ती प्रान्त की शोभा देखते हुए मारीच के पास जाते समय अनेकानेक वृक्षों का वर्णन प्राप्त होता है --सागर के किनारे विविध प्रकार के फल- फूल वाले सहस्त्रों वृक्ष थे ।[13] कहीं कदली वन कहीं नारियल के कुंज शोभा दे रहे थे । साल , ताल तमाल तथा सुंदर फूलों से भरे हुए वृक्ष सुशोभित हो रहे हैं ।[14] कहीं श्रेष्ठ अगुरु के वन ,कहीं उत्तम जाति के तक्कोलों के उपवन कहीं तमाल के फूल ,कहीं गोल मिर्च की झाड़ियां थी ।बरगद के वृक्ष का उल्लेख है जो अपनी सघन छाया के कारण मेघों की छटा के समान प्रतीत हो रहा था। उस वृक्ष की प्रसिद्ध शाखाएं चारों ओर से सौ योजन तक फैली थी ।

कृष्किन्धा कांड के प्रथम सर्ग में ही वृक्षों के फूल और फल से युक्त होने तथा सुगंध के छा जाने का वर्णन है। वहां के ऊंचे- ऊंचे वृक्ष अपनी फैली हुई शाखाओ के कारण अनेक शिखरों से युक्त पर्वतों के समान सुशोभित हैं ।सुंदरकांड में विविध वृक्षों विशेष रूप से सरल (चीड)कनेर खिले खजूर , प्रियाल (चिरौंजी) मुचुलिन्द (जम्बीरी नींबू) ,कुटज केतक (केवड़े) सुगंधपूर्ण प्रियंङ्गु (पिप्पली),नीप (कदम्ब या अशोक) छितवन असन कोविदार करवीर का वर्णन किया गया है ।युद्ध कांड में औषधियों का भी वर्णन प्राप्त होता है ।इंद्रजीत के ब्रह्मास्त्र से वानर सेना सहित रामादि के मूर्छित होने पर जाम्बवान ने हनुमान से कहा- हिमालय पर पर्वत ऋषभ और कैलाश के शिखर से मध्य एक औषधियों का पर्वत है ।वह पर्वत सब प्रकार की औषधियू से युक्त है। वहां मृत संजीवनी विशल्यकरणी सुवर्णकारी और संघानी नामक महौषधि है । औषधियो का यह वर्णन अत्यंत दीप्त हो रहा था । हनुमान द्वारा हिमालय से दिव्य औषधियों का पर्वत लाने पर औषधियों के गन्ध से श्रीराम ,लक्ष्मण एवं समस्त वानर स्वस्थ हुए। रावण की शक्ति से लक्ष्मण के मूर्छित होने पर सुषेण जी ने भी इन्हीं औषधियों का वर्णन किया है -- सौम्य! तुम शीघ्र ही यहां से महोदय पर्वत पर जाओ ,जिसका पता जाम्बवान ने तुम्हें बताया था। विशल्यकरणी सावण्यकरणी, संजीव करणी और संघानी महौषधियों को ले जाओ। इन समस्त औषधियों का विस्तृत विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है-

1/ विशल्यकरणी -यह शरीर में धंसे हुए बाण आदि को निकालकर घाव भरने और पीड़ा को दूर करने वाली होती है ।

2/सुवर्णकरणी- यह शरीर में पहले की सी रंगत लाने वाली मानी जाती है ।

3/संजीवकरणी -यह मूर्छा दूर कर चेतना प्रदान करने वाली होती है।

4/ संघानी - यह टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने वाली मानी जाती है। युद्ध कांड में वर्णन प्राप्त होता है कि महा तेजस्वी कविश्रेष्ठ सुषेण ने उस औषधि को कूट -पीस कर लक्ष्मण जी की नाक में सुनाया था ।लक्ष्मण के सारे शरीर में बाण धंसे हुए थे ।उस अवस्था में उस औषधि को सूंघते ही उनके शरीर से बाण निकल गए ,वे निरोग हो गए ।रामायण में वर्णित इन औषधियों का उल्लेख सिद्ध करता है कि उस समय औषधियों का पर्याप्त प्रचलन में था। इनके सेवन से प्राणी स्वस्थ एवं

निरोग हो जाता था ।इस प्रकार रामायण में अनेकानेक वृक्ष- वनस्पतियों एवं औषधियों का वर्णन प्राप्त होता है ,जिससे रामायण में वनस्पति विज्ञान के आधिपत्य को स्वीकार किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आप औषधिरुत नोऽवन्तु, धौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः। ऋग्वेद 5.41.11
2. यजुर्वेद अयोध्या कांड 16,17,19
3. औषधयो वै पशुपति । शतपथ ब्राह्मण – 6 . 1. 3. 12
4. प्राणों वै वनस्पतिः । एतरेय 2.4 और 10
5. प्राणों वै वनस्पतिः । कौषीतकि 12.7
6. बालकांड सर्ग 5, श्लोक 12
7. अयोध्या कांड 52 सर्ग ,श्लोक 102
8. अयोध्या कांड 54 सर्ग, श्लोक 4
9. अयोध्या कांड 54 सर्ग, श्लोक 7
10. अयोध्या कांड 54 सर्ग, श्लोक 38,41
11. अयोध्या कांड 55 सर्ग, श्लोक 6,7
12. अयोध्या कांड 94 सर्ग, श्लोक 8,9,10
13. अरण्यकांड 35 सर्ग, श्लोक 11
14. अरण्यकांड 35 सर्ग, श्लोक 13